इंसानी शक्ल के चमचों की कागजी दुनिया !

आजकल जहाँ देखो वहां हरेक नेता, विभाग प्रमुख, समाजप्रमुख, घरप्रमुख से लेकर हर मुख को चम्मच की आवश्यकता होती है, और बिना चम्मच के सब अधूरे है। चम्मच असल में सामान्य से लेकर बहुमूल्य धातु की हुआ करती थी जिसमें राजे महाराजे पूंजीपति सोने-चांदी की चम्मच से सामान्य व्यक्ति तांबे-पीतल की चम्मच से और गरीब व्यक्ति लोहे स्टील की चम्मच से अपना जीवन गुजर बसर कर लिया करते थे। आज धातुओं की चम्मच का समय बीत गया और उनकी जगह जीते जागते इन्सान ने ले ली और खुद को एक अच्छी और कुशल चम्मच-चमचा के रूप में प्रतिष्ठित कर लिया है और जो चम्मचों के प्रभाव को जानने समझने लगे वे अब खुद को सम्पूर्ण रूप से चमचा बनाने पर तुल गया है। कानूनन जो काम गैरकानूनी है, वह हम जानबूझकर कानून के संरक्षण में करते है, विशेषकर संविधान की शपथ लेकर हमारे नेता संविधान को नहीं मानते है और हर जगह हर विभाग में चमचों की शक्ल में हमारे सांसद और विधायक सहित अन्य निर्वाचित जनप्रतिनिधियों के द्वारा अपने किसी एक कार्यकर्त्ता को प्रतिनिधि बनाकर एक कागज़ थमा दिया जाता है जो इनका कागजी शेर अर्थात प्रतिनिधि होता है। देश का संविधान या कानून का विधान कानूनन रूप से इन जनप्रतिनिधियों की गैर मौजूदगी में उस समय के लिए इन प्रतिनिधित्व का अधिकार देता है की उनकी अनुपस्थिति में उसी समय के लिए उनका कागजी प्रतिनिधि इनका पक्ष रख सकेगा किन्तु एक बैठक हेतु अधिकृत किये जाने के उस पत्र को जारी करने वाले नेता के सम्पूर्ण कार्यकाल का पट्टा मान ये कागजी शेर दहाड़ना शुरू कर राजपाट सँभालने लग जाते है। यह ठीक वैसी ही बात हुई जब हमारे पूर्वजों के समय भारत देश सोने की चिड़िया हुआ करता था आज के इन नेताओं की इन्ही करतूतों के कारण अब भारत मिटटी की चिड़िया भर बनकर रह गया है।

एक जमाना था जब इन्सान की शक्ल उसकी अक्ल की गवाही ही नहीं बल्कि उसके कार्य क्षेत्र का परिचय भी देती थी और शक्ल देखकर लोग पहचान लेते थे की अमुक व्यक्ति अमुक विभाग का है, या अमुक काम करता है। शक्ल के साथ इन्सान का पहनावा भी उसकी पहचान का हिस्सा था जिससे व्यक्ति की जात-विरादरी, कुल-खानदान का पता भी चल जाया करता था किन्तु आज के इन्सान की शक्ल में इन्सान इंसानियत खो चूका है और जहा देखते है सर्वत्र इंसानी शक्ल में चमचे ही चमचे दिखाई देते है जिनकी आस्था जिनका ईमान और जिनका धर्म बस चमचागिरी है। वे चमचागिरी करने से पहले खुद को एक अच्छे चम्मच के रूप में ढाल लेते है, जिन इंसानों की कमर पीठ आपस में मिल रही हो और वे 380 कोण तक झुकने में माहिर हो समझिये वे कुशल और श्रेष्ठ चमचे है। आजकल चमचो को जानना पहचानना बड़ा मुश्किल हो गया है, कि जो व्यक्ति मेरे साथ है, मेरी हाँ में हां मिलाकर मुझे प्रोत्साहित कर रहा है क्या सच में वह मेरे प्रति निष्ठावान है या किसी की चमचागिरी कर उसके इशारे से मुझे शूली पर चढ़ा रहा है। असल में चमचागिरी इतनी व्यापक और विस्तारित हो गई है जहाँ अपने साथ रहकर अपने से प्रेम जता रहे लोग, सच में अपने साथ है या प्यार जताकर वे अपने विरोधी खेमे से पहचान कर पाना मुश्किल हो गया है। इन चमचों की विशेषता होती है की ये आपके साथ रहते ही आपका कलेजा निकालते समय उफ़ तक न करें और आपको पता तक न चलने दे की कलेजा निकाल लिया है। ये चमचे अपने मालिक के बफादार होते है और आपकी निष्ठां की कसम खाने के साथ चमचागिरी की मिशल प्रस्तुत कर आपकी प्याज रोटी चबाकर प्रशंसा के किले खड़े कर दे और मन ही मन आपके डाइनिंग टेबल - ट्रे ओर घर- दालान बगीचे आदि को हजम करने का षड्यंत्र लिए आये है , जबकि आपको यह पता भी नही की ये शहर की सड़कों -पुलों को निगलने के बाद डकार तक नहीं लेते है। जिन्हें दुश्मन देश का एजेंट की भाँती अपने दुश्मन की कतार में शुमार समझना चाहिए,आप यह न कर चुक कर रहे होते है। क्या यह हमारे लिए गंभीर प्रश्न ही नहीं अपितु गंभीर समस्या नहीं है कि जिसे आप अपना मान रहे हो असल में वह अपने आका के लिए चम्मचागिरी कर हमारे प्यार को ठुकुराकर गद्दारी का तमगा लेने की दिशा में सफल होने जा रहा है।

चमचागिरी करने वाले चम्मच बड़े से बड़े रुतबे इनाम में पाते रहे है, आपके लिए उसकी चमचागिरी गद्दारी हो सकती है किन्तु यही गद्दारी का मिथक ओपन न होने की स्थिति में वह इन्सानी शक्ल कुशल चमचे को मात देकर अपने चमचे जैसी शकल को साबित कर चुकी होती है, यह तो आपका दुर्भाग्य है की आप दुसरे के चमचे से मात खा चुके होते है। चमचागिरी से अनेकों को पत्रकार बनते देखा है पर वे पत्रकारभर है, उन्हें लिखना नहीं आता, किन्तु वाक्पटुता में वे नटवरलाल को मात देकर चीन अमेरिका जैसे देशों को भी अपनी बपौती बताकर बेचने में दक्ष है इसलिए वे अपने मुख मियामिट्ठू होते है और लिखने के लिए इमानदार चम्मच जो मिल जाया करते है। आप अच्छे लेखक, पत्रकार हो सकते है लेकिन चमचागिरी करने वालों के लिए आपकी औकात गेहूं की कटाई में गिरे हुए उस चने से ज्यादा नहीं हैं जो मिट्टी में गिरने के बाद मिटटी का भी हिसाब करने को बाध्य है। उन चम्मच पत्रकारों के रुतबे और उन्हें मिलने वाले तमगो की एक ठोकर भर आपके अस्तित्व को मिटटी में धसा देगी, आपके पाले हुए भ्रम रेगिस्तान में पानी को तरसते हिरण को दौड़ते दौड़ते थका कर बिन पानी प्राण त्यागने से ज्यादा कुछ नहीं है।

आप अपने आसपास देखिये, जहाँ नजर जायेगी आपको चमचे ही चमचे दिखेंगे, कोई प्रधानमंत्री या मंत्री का, कोई मुख्यमंत्री या उनके मंत्री का, कोई सांसद या विधायक का, कोई जिला प्रशासन या शासन का, कोई अदालत या पुलिस थाने का हर विभाग में चाहे वे सरकारी हो या गैर सरकारी सभी जगह, बस स्टैंड पर, अस्पताल में, होटलों में, पार्कों में सौ- सौ, पांच- पांच सौ रूपये के नोटों की गड्डियाँ लिए हाथों में डायरिया या मोबाइल के साथ चित्र खींचते, रिपोर्ट भरते चमचे मिल जायेंगे जो खुदका और अपने आकाओं का अपनी मूल सेवा से हटकर परदे के पीछे की सेवाओं के प्रदाता के रूप में काम करते मिल जायेंगे। असल में चमचों के इस ढेर में जो लुट खसूट के सरगना है वे किसी मंदिर में, ट्रस्ट में, सामाजिक सेवाओं के केन्द्रों में 'डाकू' के स्थान पर सेवक के रूप में अपनी इंसानी शक्ल को चमचे में ढालें हुए होते है ताकि डाकू की शक्ल दिहाड़ी काम करने वाले मजदूर से मेच कराई जाकर शैतानी शक्ल को बारूदीबम के खोल से मुक्त कर चमचे के रूप में घोषित कर दी जाए, जनता का क्या है नेता की शक्ल पर पहनावे पर वह खान ध्यान रखती है, बस कानों में घोषणा सुनाई भर जाए घोषणा ही उसके लिए संजीवनी बूटी का काम करती है, जनता को जनता की शकल प्यारी लगती है , चमचों जैसे लोग की जनता परवाह नही करती है।

असल में चमचो और चमचों जैसी इंसानी शक्ल का जोर तब तक रहेगा जब तक इस शक्ल का नकाब उतरने के बाद जनता उसे देख नहीं लेती है तब तक इन सिरफिरे चमचों का इतिहास पहाड़ों- किलों की दीवारों पर लिखा जाता रहेगा। इन चमचों ने अलंकारों के दिए हुए ओवरकोट पहने है, जिनके पास खुद अपनी योग्यता का कुछ भी नहीं, सिवाय दूसरों की सुहाग सेजों पर खुद सोने की तड़फ को पूरा करने में ये शैतान के बाप है और इनकी जिन्दगी कैदखाने की सिफारिश होनी चाहिए किन्तु ये कैद को रम व्हिस्की की तरह पीकर आज को कल में बदल खुशी में जीते है। इनकी हर रात बिस्तर में सोते समय पायजामे-शलवार की गाठे खुलती होती है और उठते है तो बकरी की तरह कमजोर दुर्गन्ध से भरे होते है, जब ये अपने-आपको मृत पड़ा देखते हैं तो जिंदगी को याद में लाने के लिए तिकड़म लड़ाते हैं। इन चमचों के लिए अब कहने के लिए कुछ भी बाकी नहीं, तय करने के लिए कुछ भी बचा नहीं जैसे शब्द इनके लिए नपुंसक हो गए हों और एक एक कदम इनके लिए बाँझ हो गए हों, हम इन चमचों के इतिहास का गुणगान कैसे करे जबकि अगला कदम रखने के लिए इनके पास जमीन तक न हो, किन्तु ये चमचे आज न चाहते हुए भी हमारी संस्कृति का अंग बन चुके है। आप हो या हम इन चमचों के बिना सभी अधूरे है, हमारे पास हमारे चुने हुए जनप्रतिनिधि है, हमारा प्रशासन है और इनके पास अधिकृत चमचे है, इन्सान की शक्ल में ढलते चमचे, तिकड़मबाज और दुर्गन्ध से भरे चमचे जो सिर्फ कागजी शेर है, एक कागज़ पर प्रतिनिधि शेर अब खूंखार हो चुके है जिन्हें जंगलों में होना था वे शहर में खुलेआम शिकार कर रहे है और मजे से शिकार में हिस्साबांटी का कभी न खत्म होने वाला खेल चल रहा है, जिसका अंत दिखाई नहीं देता है।

आत्माराम यादव पीव
वरिष्ठ पत्रकार
श्रीजगन्नाथ धाम काली मंदिर के पीछे,
ग्वालटोली, नर्मदापुरम
मध्यप्रदेश मोबाईल
99933766 16

'बनारस में न होते तो नामवर नामवर न होते।' काशीनाथ सिंह

वाराणसी। नामवर बनारस में न होते तो नामवर नामवर न होते। उन्हें नामवर बनारस ने बनाया; उन्हें दिल्ली ने नामवर नहीं बनाया। हिन्दी के वरिष्ठ कथाकार काशीनाथ सिंह ने 'नामवर सिंह : आलोचना और वैचारिकता' विषयक त्रि-दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा कि नामवर सिंह की कक्षाओं के बारे में जाने बिना उन्हें पूरी तरह नहीं जाना जा सकता। क्लास में जगह न होने की वजह से विद्यार्थी खिड़की और दरवाजों के पास खड़े होकर सुना करते थे। इनकी कक्षाओं में अन्य विषयों के विद्यार्थी भी यह देखने आते थे कि क्या पढ़ा रहे हैं जो इतनी भीड़ है। नामवर सिंह की शिक्षा और अध्यापन की शुरुआत यहीं हिन्दी विभाग से हुई थी। ऐसे में इस विभाग द्वारा यह आयोजन उनको याद करने का महत्वपूर्ण उपक्रम है। फुलवा मरिगा रह गई बास– मेरे लिए नामवर वह फूल हैं जो अब नहीं हैं लेकिन उनकी सुगंध अभी भी जीवन में है। प्रो काशीनाथ सिंह ने प्रेमचंद सभागार, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में उक्त विचार व्यक्त किए। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा प्रो0 नामवर सिंह की जन्मशती पर आयोजित संगोष्ठी का शुभारंभ उद्घाटन-सत्र में महामना मालवीय जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण के साथ किया गया। इसके बाद विश्वविद्यालय की परंपरा के अनुसार कुलगीत गायन किया गया। इसके उपरांत मंचस्थ अतिथियों को अंगवस्त्र, पुष्पगुच्छ एवं पुस्तकें भेंटकर उनका स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन वक्तव्य देते हुए वरिष्ठ कवि अरुण कमल ने कहा कि नामवर जी की पूरी आलोचना साहित्य की श्रेष्ठता को पहचानने का प्रयास है। उनके अनुसार श्रेष्ठ कवि वक्तव्य देने के बजाय क्षण की सृष्टि करता है। भाव सबलता और बहुलता किसी कविता को श्रेष्ठ बनाते हैं। ढेर सारे ब्रंद्रों का समाहार रचना को श्रेष्ठता प्रदान करता है। जो शब्द मुद्रित हैं वही अंतिम सत्य हैं। '

संगोष्ठी का बीज वक्तव्य देते हुए वरिष्ठ कथाकार एवं तद्भव के संपादक अखिलेश ने कहा कि 'हिन्दी की लगभग हर बहस में नामवर सिंह उपस्थित रहे। उन्होंने हमारी भाषा को अपने मेधा और साहस के बल पर उत्तरोत्तर समृद्ध किया। उन्होंने अपने नये-नये पाठ्यक्रमों के जरिये हमारी भाषा को जो सम्मान दिलाया वह महत्त्वपूर्ण है। नामवर जी ने व्याख्यान को एक कला और संरचना की तरह रचा था। इन्होंने वक्तृता को एक विधा के रूप में स्थापित किया। इनको सुनने के लिए हिन्दी साहित्य के इतर के लोग भी उत्सुक रहा करते थे। नामवर जी का व्यक्तित्व संशिलष्ट टेक्स्ट की तरह बहुआयामी था। वे संस्कृति और साहित्य में बहुलता का सम्मान करते थे। नामवर सिंह ने अपभ्रंश, कहानी, उपन्यास, छायावाद आदि की नयी व्याख्या करके पुनर्स्थापित किया। वे पुराने रचनाकारों के बजाय नयी रचनात्मकता की सोहबत में रहना पसंद करते थे। वे निश्चितवाद के हमेशा विरुद्ध रहते थे। '

स्वागत वक्तव्य देते हुए हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो0 वशिष्ठ अनूप ने कहा कि नामवर सिंह ने भारतीय ज्ञान और आलोचना परंपरा में बहुत सार्थक हस्तक्षेप किया है। इन्होंने आलोचना की बहुत सारी परिभाषाएँ बदल दी हैं। संगोष्ठी की रूपरेखा प्रस्तावित करते हुए प्रो0 मनोज कुमार सिंह ने कहा कि वे सिर्फ़ साहित्य के आलोचक नहीं थे, बल्कि उनके लिए आलोचना जीवन की आलोचना थी। जीवन जीने के लिए जो भी बाधा उत्पन्न हो रही थी नामवर जी ने उन सभी की सविवेक आलोचना प्रस्तुत की। सरहपा से लेकर समकालीन हिन्दी रचनाकारों तक पर उन्होंने लिखा।

उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध समाजविज्ञानी प्रो0 आनंद कुमार ने कहा कि नामवर सिंह ने अपनी धोती कुर्ता, तनी हुई गर्दन और गंभीर विवेक से दिल्ली शहर में मशाल की तरह रौशनी की। दिल्ली शहर की कोई भी गोष्ठी नामवर जी के बिना संभव नहीं होती थी। वे सभा-सेमिनारों में दंगल की तरह चुनौती दिया करते थे। उनकी रचनाओं में सर्वकालिक बुद्धिजीवी और समर्पित शिक्षक का तेज दिखाई पड़ता है।' हिन्दी की प्रवासी साहित्यकार डॉ0 दिव्या माथुर ने अपने अतिथि वक्तव्य में कहा कि नामवर जी जितना अच्छा लिखते थे उतना अच्छा ही बोलते भी थे। नामवर सिंह ने 'दूसरी परंपरा की खोज' और 'वाद-विवाद-संवाद' किताब में प्रवासी साहित्य के लेखकों को काफ़ी सराहा है। नामवर सिंह पर पाश्चात्य विचारकों ल्योतार, मिशेल फूको और टेरी ईगल्टन आदि का प्रभाव है। '

उद्घाटन सत्र का संचालन हिन्दी विभाग के आचार्य प्रो0 नीरज खरे ने और धन्यवाद ज्ञापन हिन्दी विभाग के ही आचार्य प्रो0 प्रभाकर सिंह ने किया। कार्यक्रम में प्रो0 बलिराज पाण्डेय, प्रो0 अवधेश प्रधान, प्रो0 सदानंद शाही, प्रो0 राजकुमार, प्रो0 शशिकला त्रिपाठी, प्रो0 विनय कुमार सिंह, प्रो0 श्रद्धा सिंह, प्रो0 कृष्णमोहन पाण्डेय, प्रो0 श्रीप्रकाश शुक्ल, प्रो0 प्रभाकर सिंह, प्रो0 कृष्णमोहन सिंह, प्रो0 बसंत त्रिपाठी, डॉ0 रामाज्ञा राय, पल्लव, डॉ0 किंगसन सिंह पटेल, अनीता गोपेश, डॉ0 सूर्यनारायण, डॉ0 मोतीलाल, शिव कुमार पराग, उज्ज्वल भट्टाचार्य, डॉ0 राहुल चतुर्वेदी, विवेक निराला, डॉ0 महेन्द्र प्रसाद कुशवाहा, डॉ0 विवेक सिंह, डॉ0 प्रभात कुमार मिश्र, डॉ0 मुशर्रफ़ अली, डॉ0 रविशंकर सोनकर, डॉ0 विध्याचल यादव, डॉ0 सुशील सुमन, डॉ0 मानसी रस्तोगी, डॉ0 राज कुमार मीणा, डॉ0 प्रीति त्रिपाठी, विहग वैभव, डॉ0 आशा यादव आदि बनारस एवं देश के गणमान्य विद्वानों के साथ ही भारी संख्या में शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों की उपस्थिति रही।

अंकित कुमार मौर्य,
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय— वाराणसी।
मो. नं0 9695363793

शिवकुमार बटवाडा एक समर्पित राज्य कार्मिक

राजकीय सेवा केवल आजीविका अर्जित करने का माध्यम नहीं होती, वह समाज निर्माण का एक दीर्घकालिक संकल्प होती है, और जब कोई व्यक्ति अपने जीवन के सैंतीस अमूल्य वर्ष शिक्षा विभाग को समर्पित करता है तो वह केवल कागज़ी कार्यवाही या दैनंदिन दायित्वों का निर्वहन नहीं करता बल्कि आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को स्थिर, सुरक्षित और सशक्त बनाने में अपना मौन किंतु गहरा योगदान देता है, ऐसे ही समर्पित, कर्मनिष्ठ, अनुशासित और संघर्षशील व्यक्तित्व का नाम है शिवकुमार बटवाडा, जिन्होंने 17 दिसंबर 1988 को राजकीय माध्यमिक विद्यालय हसटेडा, चोमू में अपनी राजकीय सेवा का प्रथम चरण आरंभ किया और प्रारंभ से ही यह स्पष्ट कर दिया कि वे नौकरी करने नहीं बल्कि दायित्व निभाने आए हैं, सीमित संसाधनों, ग्रामीण परिवेश और प्रशासनिक जटिलताओं के बीच उन्होंने विद्यालयीन व्यवस्था को सुव्यवस्थित करने, अभिलेखों को क्रमबद्ध रखने, समयबद्ध कार्यसंस्कृति विकसित करने तथा शिक्षकों के साथ सौहार्दपूर्ण समन्वय स्थापित कर शैक्षणिक वातावरण को सकारात्मक दिशा देने का सतत प्रयास किया, वे यह भलीभांति समझते थे कि शिक्षा व्यवस्था की जड़ें प्रशासनिक अनुशासन से ही पुष्ट होती हैं और यदि कार्यालय सुदृढ़ होगा तो कक्षा का वातावरण भी स्वाभाविक रूप से सशक्त होगा, यही कारण रहा कि उन्होंने अपने प्रारंभिक काल से ही पारदर्शिता, स्पष्टता और जवाबदेही को अपनी कार्यशैली का आधार बनाया, समय के साथ उनकी दक्षता, धैर्य, कार्यकुशलता और सादगीपूर्ण व्यवहार ने उन्हें शिक्षा विभाग में विशिष्ट पहचान दिलाई और विभिन्न दायित्वों का सफल निर्वहन करते हुए वे उस मुकाम तक पहुँचे जहाँ प्रशासनिक निर्णयों का सीधा प्रभाव व्यापक शैक्षणिक व्यवस्था पर पड़ता है, वे मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय लालसोट में प्रशासनिक अधिकारी पद पर आसीन हुए जहाँ उनका दायित्व केवल कार्यालय संचालन तक सीमित नहीं रहा बल्कि पूरे ब्लॉक की शैक्षणिक और प्रशासनिक गतिविधियों का समन्वय, निगरानी और सुव्यवस्था सुनिश्चित करना था, उन्होंने लंबित प्रकरणों के त्वरित निस्तारण को प्राथमिकता दी, फाइलों की अनावश्यक देरी को समाप्त करने का प्रयास किया, अभिलेख व्यवस्था को व्यवस्थित किया, डिजिटल प्रक्रियाओं को स्वीकारते हुए कार्य में पारदर्शिता लाई और कर्मचारियों की समस्याओं को संवेदनशीलता तथा न्यायसंगत दृष्टिकोण से सुना, उनकी प्रशासनिक शैली में कठोरता के स्थान पर दृढ़ता, औपचारिकता के स्थान पर मानवीयता और आदेश के स्थान पर संवाद का महत्व अधिक दिखाई देता था, वे अधीनस्थ कर्मचारियों के लिए केवल अधिकारी नहीं बल्कि मार्गदर्शक की भूमिका निभाते थे और उच्चाधिकारियों के लिए विश्वसनीय सहयोगी सिद्ध होते थे, कर्मचारी संघ लालसोट के तहसील अध्यक्ष के रूप में उन्होंने संगठनात्मक जीवन में भी सक्रिय और संतुलित भूमिका निभाई, उन्होंने संघर्ष को टकराव का माध्यम नहीं बल्कि समाधान की प्रक्रिया के रूप में देखा और कर्मचारियों की समस्याओं को तथ्यों, मर्यादा और तार्किक प्रस्तुति के साथ प्रशासन तक पहुँचाया, उनके नेतृत्व में संघ एक अनुशासित, संयमित और प्रभावशाली इकाई के रूप में स्थापित हुआ जहाँ व्यक्तिगत हितों से ऊपर सामूहिक हित को प्राथमिकता दी गई! जुलाई 2013 का प्रदेशव्यापी कर्मचारी आंदोलन उनके सार्वजनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण अध्याय रहा जब कर्मचारियों ने अपनी जायज़ माँगों के समर्थन में एकजुट होकर आवाज बुलंद की और जयपुर के उद्योग मैदान में विशाल धरना आयोजित हुआ, उस समय शिवकुमार बटवाडा अग्रिम पंक्ति में खड़े दिखाई दिए और उन्होंने लालसोट तहसील के कर्मचारियों को संगठित कर स्पष्ट उद्देश्य, अनुशासन और आत्मविश्वास के साथ आंदोलन में सहभागी बनाया! उन्होंने केवल औपचारिक उपस्थिति दर्ज नहीं कराई बल्कि तन, मन और धन से आंदोलन को सशक्त सहयोग प्रदान किया! कर्मचारियों के आवागमन, ठहराव और सहभागिता की व्यवस्था में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई और यह सुनिश्चित किया कि लालसोट तहसील का प्रतिनिधित्व संख्या के साथ-साथ संगठन और मर्यादा के स्तर पर भी प्रभावशाली हो, उनकी विशेषता यह रही कि उन्होंने आंदोलन को उग्रता से दूर रखते हुए संयम, धैर्य और तर्कपूर्ण प्रस्तुति पर बल दिया और कर्मचारियों को यह संदेश दिया कि संघर्ष की सफलता एकजुटता, अनुशासन और नैतिक बल में निहित होती है! धरने के दौरान वे निरंतर कर्मचारियों के बीच उपस्थित रहे, संवाद बनाए रखा, उनका मनोबल बढ़ाया और यह सुनिश्चित किया कि आंदोलन की ऊर्जा सकारात्मक दिशा में प्रवाहित हो, उनके व्यक्तित्व में ईमानदारी और पारदर्शिता की दृढ़ नींव, अनुशासन और समयबद्धता की स्पष्ट झलक, मानवीय दृष्टिकोण की संवेदनशीलता, संगठन क्षमता की प्रभावशीलता और संयमित नेतृत्व का संतुलित समन्वय दिखाई देता है, वे सादगीपूर्ण जीवन शैली में विश्वास रखते हुए पद की गरिमा को कर्म से ऊँचा उठाने वाले अधिकारी रहे! 37 वर्षों की गौरवपूर्ण सेवा पूर्ण कर जब वे प्रशासनिक अधिकारी पद से सेवानिवृत्त हो रहे हैं तब यह केवल एक अधिकारी की औपचारिक विदाई नहीं बल्कि एक ऐसे कार्यकाल का समापन है जिसने शिक्षा विभाग में कर्तव्यनिष्ठा, नैतिकता और संवेदनशील प्रशासन की मिसाल कायम की, उन्होंने अपने व्यवहार से यह सिद्ध किया कि पद की महत्ता उसकी ऊँचाई से नहीं बल्कि उस पर आसीन व्यक्ति की निष्ठा, ईमानदारी और कर्मठता से बढ़ती है, आज सहकर्मी, शिक्षक और कर्मचारी उन्हें केवल एक अधिकारी के रूप में नहीं बल्कि मार्गदर्शक, संयमी नेता, संवेदनशील प्रशासक और सच्चे साथी के रूप में स्मरण करते हैं, उनकी जीवनयात्रा यह संदेश देती है कि यदि सेवा का मार्ग समर्पण, सत्यनिष्ठा और सामूहिक हित की भावना से तय किया जाए तो वह अंततः सम्मान, संतोष और सामाजिक विश्वास की मंजिल तक अवश्य पहुँचता है और यही उनके संपूर्ण कार्यकाल की सबसे बड़ी उपलब्धि और स्थायी पहचान है।

डॉ राजेंद्र यादव आजाद
मोबाइल 94 1427 128 8

टोयोटा किर्लोस्कर मोटर और इंडियन आर्म्ड फोर्सेज़ ने नई दिल्ली में भारत रणभूमि दर्शन सफलतापूर्वक पूरा किया

नई दिल्ली, टोयोटा किर्लोस्कर मोटर (टीकेएम) भारत रणभूमि दर्शन के लिए ऑफिशियल मोबिलिटी पार्टनर है और इंडियन आर्म्ड फोर्सेज ने भारत की समृद्ध मिलिट्री विरासत, बहादुरी और एकता की हमेशा रहने वाली भावना को ट्रिब्यूट देते हुए देश भर में चलाए गए अभियान को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है। समापन समारोह में चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ, जनरल उपेंद्र द्विवेदी, इंडियन आर्मी, इंडियन नेवी, बीएसएफ, सिविल एडमिनिस्ट्रेशन और टोयोटा किर्लोस्कर मोटर लीडरशिप टीम सहित इंडियन आर्म्ड फोर्सेज के सीनियर अधिकारी मौजूद थे। टोयोटा हिलक्स गाड़ी से चलाया गया अभियान नई दिल्ली में नेशनल वॉर मेमोरियल पर खत्म हुआ, जो हिम्मत और जुझारूपन का सम्मान करने वाली यात्रा का एक दिल को छू लेने वाला अंत था।

यह अभियान 3 फरवरी को गुजरात के द्वारका से शुरू हुआ था, 23 दिनों में 14 शहरों और 4 राज्यों से होकर गुजरा, जो स्ट्रेटेजिक और ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण इलाकों से होकर गुजरा, और 4,400 किलोमीटर से ज्यादा की दूरी तय की। इस सफर में इंडियन आर्मी, इंडियन नेवी, बॉर्डर सिक्योरिटी फ़ोर्स (बीएसएफ) और युद्ध के अनुभवी सैनिकों की 32 लोगों की टुकड़ी शामिल हुई, जिसने आर्म्ड फोर्स के लिए याद में राष्ट्रीय गौरव और सम्मान का एक साझा संदेश दिया।

ऑफिशियल मोबिलिटी पार्टनर के तौर पर टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ने अपनी 15 टोयोटा हिलक्स गाड़ियों के एक ग्रुप के साथ इस सफर में मदद की, जो अपनी मज़बूती, टिकाऊपन और भरोसे के लिए जानी जाती हैं। इससे रेगिस्तान, ऑफ-रोड हिस्सों और मुश्किल रास्तों सहित अलग-अलग इलाकों में आसानी से चलने-फिरने में मदद मिली। टोयोटा हिलक्स गाड़ियों ने पूरी यात्रा में एक जैसा परफॉर्मेंस दिया, जो एडवांस्ड 4×4 ऑफ-रोड क्षमता से पॉवर्ड था। इसके अलावा, टीकेएम ने स्पेयर पार्ट्स और ऑन-ग्राउंड टेक्निकल मदद सहित पूरी एंड-टू-एंड सर्विस सपोर्ट दिया, जिससे पूरे रास्ते में आसान ड्राइव सुनिश्चित हुई।

टोयोटा किर्लोस्कर मोटर के कंट्री हेड और एग्जीक्यूटिव वाइस प्रेसिडेंट- कॉर्पोरेट अफेयर्स एंड गवर्नेंस श्री विक्रम गुलाटी ने कहा, 'भारत रणभूमि दर्शन का सफलतापूर्वक पूरा होना हमारे आर्म्ड फोर्सेज के जबरदस्त जोश को एक ट्रिब्यूट है। टोयोटा किर्लोस्कर मोटर के लिए इस शानदार इनिशिएटिव के साथ कोलेबोरेट करना बहुत गर्व की बात है। इस एक्सपीडिशन के लिए मोबिलिटी पार्टनर के तौर पर टीकेएम की हिलक्स गाड़ियों ने पूरे सफर में शानदार ऑन-टेरेन कैपेबिलिटी दिखाई, जिससे मुश्किल जगहों पर बिना रुके आगे बढ़ सके और कुर्बानी व हिम्मत की कहानियों को सम्मान देने और शेयर करने के लिए कम्युनिटी के साथ अच्छी तरह से जुड़ने का मौका मिला। '

भारत रणभूमि दर्शन इनिशिएटिव के हिस्से के तौर पर टीकेएम ने एक्सपीडिशन के दौरान गोल्डन सिटी जैसलमेर में एक एक्सक्लूसिव 'टोयोटा हिलक्स एक्सपीरिएंशियल ड्राइव' ऑर्गनाइज किया। यह इवेंट खास तौर पर पार्टिसिपेंट्स को टोयोटा हिलक्स की मज़बूत और खास 4×4 कैपेबिलिटीज के साथ-साथ रेत के टीलों पर इसके जबरदस्त परफॉर्मेंस का सीधा अनुभव देने के लिए क्यूरेट किया गया था।

इसके अलावा, इस एक्सपीडिशन में अलग-अलग इलाकों के लोगों ने हिस्सा लिया, जिससे भारत के मिलिट्री इतिहास के बारे में जागरूकता और सराहना बढ़ी और साथ ही देशभक्ति की भावना भी मज़बूत हुई। नेशनल वॉर मेमोरियल पर अपने सफल समापन के साथ, भारत रणभूमि दर्शन देश के आभार और एकता को फिर से साबित करने वाला बन गया, क्योंकि इसने उन लोगों को सम्मान दिया जिन्होंने देश की सेवा की है और कर रहे हैं।